International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(3): 47-48

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(3): 47-48
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-03-2023
Accepted: 21-04-2023

डॉ. श्वेता शशि
सहायक प्रोफेसर (अतिथि), संस्कृत विभाग, एम० के० कॉलेज, ल०ना०मि०वि०, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. श्वेता शशि
सहायक प्रोफेसर (अतिथि), संस्कृत विभाग, एम० के० कॉलेज, ल०ना०मि०वि०, दरभंगा, बिहार, भारत

मानव कल्याण के लिए वेदों में वास्तु शास्त्रा का महत्त्व एवं वैज्ञानिकता विवेचन

डॉ. श्वेता शशि

प्रस्तावना

वेदों में भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी के अन्तर्गत वास्तु–शास्त्रा की भी गणना की जाती है। वास्तु–शास्त्रा का सिद्धान्त अत्यन्त प्राचीन तथा वैज्ञानिक है और उद्देश्य मानव शास्त्रा कल्याण करना है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जिन–जिन वस्तुओं, व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है और जो–जो क्रियाएँ करता है, उन सब को हमारे प्राचीन ऋषियों–मुनियों ने बड़े वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित किया है। ''वास्तुवास्त्रां प्रवक्ष्यामि लोकानाम् हितकाम्यया।''[1]

मनुष्य अपने निवास के लिए जो भवन आदि का निर्माण करता है उसे वास्तु–शास्त्रा के द्वारा मर्यादित किया है तथा उसी से ही अपनी मौतिक आध्यात्मिक उन्नति भी करता है। वास्तु शब्द की उत्पत्ति वस् धातु से हुई है। जिसका अर्थ है किसी एक स्थान पर निवास करना इसमें उणादी सूत्रा (वसेस्तनु–1. 78) के अनुसार तनु प्रत्यय लगा है, वहघर जिसमें मनुष्य निवास करते हैं। 'वसन्ति यत्रा मानवाः' हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है कि वास्तु–शास्त्रा सुख, भोग धन, मान, स्त्राी, पुत्रा, ऐश्वर्य तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष देने वाला है। ''यतोऽभ्युदयनिःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।''[2]

अर्थात् जिस धर्म से मनुष्य का अभ्युदय व निःश्रेयस दोनों सिद्ध हो वही धर्म कहलाता है। वास्तु–शास्त्रा में दिशाओं का बहुत महत्त्व है। इसका मनुष्य के जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। प्रकृति मानव शरीर व वास्तु का आधार पञ्चमहाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, पृथ्वी, जल) है। तथा चारो तरपफ से आठ दिशाओं के घेरे में (पूर्व, ईशान, उत्तर, वायव्य, पश्चिम, नैऋत्य, दक्षिण, अग्नेय) में निवास करता है।

'वास्तु शास्त्रादूते तस्य न स्यात क्षणनिश्चयः।
तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रामते उदीर्यते।।'[3]

वास्तु शास्त्रा सिद्धान्त के अतिरिक्त और कोई नियम नहीं है जिसके माध्यम से भवन निर्माण के लिए सम्यक–असम्यक का निर्णय लिया जा सके। वास्त्रा शास्त्रा में ईशान कोण का सर्वाधिक महत्त्व है। इसमें ईश शब्द के कारण यह प्रतीत होता है कि यह ईश्वर का स्थान है। ईश्वर के वास होने स्थान के कारण यह स्थान महत्त्वपूर्ण है। यह स्थान घर के पूर्व तथा उत्तर का कोणीय स्थान होता है। इस स्थान पर पूजा–पाठ आदि का विधान है, जिससे हर प्रकार के कार्यों में उन्नति होती है।

'वास्तुसंक्षेपतो वक्ष्ये गृहादौ विघ्न नाशनम्।
ईशान कोणादारभ्य ह्येकाशीति यायप्यते।।'[4]

ईशान कोण की वैज्ञानिकता का महत्त्व इस प्रकार सिद्ध होता है कि जैसा हम सभी जानते हैं कि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर घूमती हुई परिक्रमा करती है, तथा धरती अपने घूर्णन अक्ष से 23 डिग्री पर झुकी हुई है। इसी घूर्णन के कारण ईशान कोण (उत्तर–पूर्वद्ध पूरी तरह से खुल जाता है। इसी कारण से ब्रह्माण्ड से अधिकतम उफर्जा इसी दिशा से आती है। इसलिए वैज्ञानिकता के आधार पर भी यह स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है। यजुर्वेद में भी कहा गया है कि–

'पृथिव्याः नाभौ अन्तरिक्षं उरूपृथिव्यां दुर्य्याः दूँ हताम् सादयामि।'[5]

प्रातः काल जब सूर्योदय होता है तो ईशान कोण से जो किरणें निकलती है उसमें विटामिन डी॰ व अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व होते हैं जो मानव शरीर के हड्डियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

वास्तशास्त्रा में दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थान आग्नेय कोण माना जाता है। पूर्व और दक्षिण दिशा का कोणीय स्थान आग्नेय कोण कहलाता है। यथा नाम तथा दर्शन से ही प्रतीत हो जाता है कि यह अग्नि देवता का स्थान है। इसलिए इस स्थान पर अग्नि से सम्बन्धित कार्य करना श्रेयस्कर माना जाता है। इस स्थान पर भोजनालय तथा बिजली उपकरण आदि कार्य होने से परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। आग्नेय कोण की वैज्ञानिकता का तथ्य यह है कि इस स्थान पर सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक घर में उफर्जा का संचार बहुत अधिक होता है। इसीलिए यह स्थान गृह में सबसे गर्म स्थान माना जाता है। क्योंकि पूरे वर्ष भर सूर्य देव उसकी नजदीक आग्नेय कोण के सम्मुख रहते हैं इस कारण से उस स्थान पर गर्मी का अधिक प्रभाव पड़ता है। इसीलिए इस स्थान पर अग्नि से सम्बन्धित कार्य करना लाभदायक होता है। वायव्य कोण–उत्तर और पश्चिम दिशा के मध्य का कोणीय स्थान को वायव्य कोण कहलाता है। इस स्थान पर वायु का प्रकोप सबसे अधिक रहता है। इसे वरुण देव का स्थान भी माना जाता है। इस स्थान का सीधा सम्बन्ध जल तथा वायु देवता हमेशा चलायमान है, इसीलिए इस स्थान पर कोई भी कार्य स्थायी नहीं करना चाहिए। इस स्थान पर लगातार शयन भी नहीं करना चाहिए।

वायव्य कोण का वैज्ञानिक कारण यह है कि इस दिशा में हमेशा वायु का प्रवाह अधिक होता है। इसीलिए यहाँ स्थित होने पर व्यक्ति की ख्याति वायु के साथ–साथ चारों ओर पफैलती है। इसीलिए इस स्थान को लगातार बन्द नहीं रखना चाहिए। कहा गया है–

'सुखं धनानि बुद्धिश्च संतति सर्वदा नृणाम।
प्रियान्येषां च संसिद्धि सर्वस्यात शुभ लक्षणम्।।'[6]

नैऋत्य कोण दक्षिण तथा पश्चिम दिशा के कोणीय स्थान को कहा जाता है। यह पृथ्वी तत्त्व है, तथा इस दिशा का स्वामी राहु ग्रह होता है। नैऋत्य कोण आपक घर की सुख समृद्धि को प्रभावित करती है इसीलिए इस स्थान को घर में उफँचा रखना चाहिए, क्योंकि धन आदि लम्बे समय तक टिकता है इसलिए यहाँ अलमारी, तिजोरी आदि रखना चाहिए। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि समस्त उफर्जा को उत्तर–पूर्व (ईशान कोण से निकलती है वह दक्षिण–पश्चिम (नैऋत्य) में ही जाकर सब रूकती है। विज्ञान के अनुसार इसी स्थान पर सबसे अधिक चुम्बकीय उफर्जा होती है। उफर्जा का शक्ति पुंज जब दक्षिण तथा पश्चिम दोनों तरपफ से टकराता है तो नैऋत्य अधिकतम जैव शक्ति सृजन करती है इसीलिए इस स्थान को उफँचा तथा भारी होना चाहिए। प्राचीन ऋषियों–मुनियों में हमारी संस्कृति के सभी पहलुओं को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने विलक्षण गुण था वह कहीं न कहीं जानते थे कि कल्कि युग में प्राणी मात्रा भी सभी तथ्यों को वैज्ञानिक परिमाप से मापेगा।

'सुखं धनानि बुद्धिश्च संतति सर्वदा नृणाम्।
प्रिसान्येषां च संसिद्धि सर्वस्यात शुभ लक्षणम्।।'[7]

अतः वास्तुशास्त्रा वर्तमान समय में मानव कल्याण करके अपना महत्त्व एवं वैज्ञानिक सार्थक कर रहा है। इसी के आधार पर आज मनुष्य अपने उद्देश्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की पूर्ति कर रहा है।

'चतुर्वर्गपफलप्राप्ति रसल्लोकश्च भवेदध्रुवम।
शिल्पशास्त्रापरिज्ञानान् मत्यो{पि स्वुरतां प्रजेते।।'[8]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि वास्तु के नियम, सिद्धान्त, सार्वकालिक, सार्वभौमिक एव सर्वत्रा उपयोगी है और यह भी कहा जा सकता है कि वास्तु शास्त्रा मात्रा श्रद्धा का विषय नहीं, अपितु पूर्णतः वैज्ञानिक है, जिस पर निरन्तर शोध की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

1. विश्वकर्म प्रकाश.
2. वैशेषिक दर्शन, महर्षि कणाद.
3. समरांगण सूत्राधार, 1/05.
4. हलायुध कोशः
5. यजुर्वेद, 14/04.
6. विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र, अध्याय–1, श्लोक–02.
7. वही.
8. विश्वकर्मा वास्तु शास्त्रा, अध्याय–13/10.